Postal Regd. MP/BHOPAL/244/21-23 *'ANASUYA' RNI-Regd. No. 45134/86*

पृष्ठ संख्या-12/प्रति अंक मूल्य - 4/-रु.
वार्षिक चन्दा 100/- रु. मात्र
आजीवन सदस्यता शुल्क : 700/-
प्रकाशन तिथि/पोस्टिंग तिथि : 1 जून 2021

लोगों में बढ़ती चिंता

हमारे देश में अधिकांश आबादी तक टीका संबंधी जानकारियाँ अपुष्ट स्रोतों से ही पहुँच रही हैं

गुजरात के खेड़ा जिले की एक खेतिहर मजदूर *अर्चनाबहन* को कोरोना होने की कोई चिंता नहीं है क्योंकि गाँव में हर कोई यही मानता है कि गरमी में वायरस मर जाता है। उन्हें लगता है, चूंकि वे पूरे दिन धूप में नंगे पैर काम करती हैं, इस महामारी से महफूज हैं। देश में दूसरी ओर पश्चिम बंगाल के 24 परगना में बुजुर्गों की देखभाल करने वाली *शगुन* वायरस से बहुत डरी हुई है। शगुन जिस समूह की सेवा करती है, उस समूह वर्ग को कोरोना ने बुरी तरह प्रभावित किया है। उन्होंने टीके के लिए अपना पंजीयन नहीं कराया है। वे मानती हैं कि टीका मुसलमानों और संथालों को संक्रमित करने का एक तरीका है। उनकी सहेली *पार्वती* भी टीका नहीं ले रही है, क्योंकि उन्हें लगता है कि गलती से नकली टीका लग जाएगा। दिल्ली की 50 वर्षीय *मीना* घरेलू कामगार हैं, उनके नियोक्ता ने टीके के लिए पंजीयन कराने में उनकी मदद की, लेकिन उन्होंने टीका नहीं लिया, क्योंकि जब टीका लेने का दिन आया, तब उनके बड़े बच्चे भी रोने लगे और उन्हें जाने नहीं दिया। बच्चों को लग रहा था कि वो टीका लेने से मर जाएँगी।

अधिकांश ग्रामीण व गरीब शहरी क्षेत्रों के स्वास्थ्य केंद्रों से सूचना यही है कि स्थानीय लोग टीकाकरण से हिचकते हैं। *देश की असंगठित अर्थव्यवस्था में काम करने वालों में टीके के प्रति हिचक व्याप्त है।* जैसा कि नौ राज्यों में हमारी 'सेवा भारत' संस्था के 1600 सदस्यों द्वारा किए गए एक अध्ययन में पाया गया है। पात्र होने पर भी सिर्फ 17 प्रतिशत लोग टीका

अनसूया

आद्य-संपादक : ज्योत्स्ना मिलन
संपादक : प्रीति शान्त

वर्ष : 36 अंक :15 जून 2021

कोविड की दूसरी लहर पर केंद्रित भीतर

3. सतत प्रयासरत टीम ...
4. तकनीकी बनी रोज़ी-रोटी का साधन ...
5. हर बहन के साथ है सेवा ...
7. घरबैठे रोज़गार सुलभ करवाया ...
8. बहनों को प्रशिक्षण दिलवाया ...

लेने के इच्छुक हैं। झारखंड जैसे राज्य में एक प्रतिशत से कम उत्तरदाताओं ने उपलब्ध होने पर टीका लेने की इच्छा व्यक्त की। ऐसा तब है, जब 54 प्रतिशत उत्तरदाता टीके की प्रक्रिया, सावधानी और देखभाल के बारे में जागरूक हैं।

ऐसी हिचक से क्या पता चलता है? बीमार होने पर अवकाश सुविधा की कमी और पंजीकरण की डिजिटल प्रक्रिया की वजह से भी टीके के प्रति अनिच्छा दिखाई पड़ती है। अधिकांश आबादी तक टीका संबंधी ज्ञान अपुष्ट स्रोतों से पहुँच रहा है। 73 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने कहा कि उन्हें परिवार और समाज के लोगों से टीके के बारे में पता चला। इनमें से 50 प्रतिशत ने वाट्सएप को सूचना का प्रमुख स्रोत बताया। बहुत कम (पाँच प्रतिशत) लोगों ने ही माना कि उन्हें आशा कार्यकर्ताओं, सरकारी स्रोत या निर्वाचित पदाधिकारियों से जानकारी मिली। इसका नतीजा है, 54 प्रतिशत लोग महसूस करते हैं कि यदि वे टीका लेते हैं, तो उनके स्वास्थ्य पर बुरा असर होगा और नपुंसकता या बांझपन से लेकर समग्र जीवन की गुणवत्ता में कमी व मृत्यु तक हो सकती है। टीका लेने के बावजूद जान गंवाने वालों की दास्तान का भी इन दिनों समाज में जोर है।

यहाँ तक कि जहाँ के लोग वैक्सीन के फायदों से वाकिफ हैं, वहाँ भी वे साइड इफेक्ट की जानकारी होने पर टीके से हिचकते हैं। थकान, बुखार होने पर सभी को काम से छुट्टी की जरूरत होगी, लेकिन इस मंदी के दौर में लोगों को रोज़गार की भी चिंता है। इसके अलावा, ऑनलाइन पंजीकरण इसलिए भी कठिन है, क्योंकि सर्वे में शामिल 28 प्रतिशत उत्तरदाताओं के पास स्मार्टफोन की पहुँच नहीं है। साथ ही, एक फोन से केवल चार लोग पंजीकरण करा सकते हैं। कई लोगों के लिए टीकाकरण केंद्र सार्वजनिक वाहन से भी एक से दो घंटे दूर है और निर्धारित स्लॉट के बावजूद पाँच-छह घंटे इंतजार करना पड़ता है। केंद्र पर भीड़ भी होती है, संक्रमण की आशंका भी बढ़ जाती है। आश्चर्य नहीं कि, उत्तराखंड की *सुनीता* के पास टीका लेने के लिए तीन दिन का समय नहीं है। ***समाज के नेताओं की जिम्मेदारी बढ़ गई है कि वे टीके लिए लोगों को प्रेरित करें और उसके लिए व्यवस्था भी।***

टीके का मूल्य भी एक अहम मुद्दा है। यदि भारत सार्वभौमिक टीकाकरण चाहता है, तो सरकार को इसकी लागत का भार वहन करना होगा। भारत में सार्वभौमिक टीकाकरण देश को कोरोना वायरस से मुक्त करने के लिए बहुत जरूरी है। हालांकि, ***मुफ्त टीकों की उपलब्धता के साथ-साथ यह सरकार के लिए भी जरूरी है कि वह स्वैच्छिक एजेंसियों, मीडिया और उद्योग जगत की मदद से लोगों को टीके के सुरक्षित होने के बारे में समझाए।*** इसके बिना हम इस धरती से कभी भी कोरोना वायरस को बाहर नहीं निकाल सकते।

-पारोमिता सेन
शोध प्रबंधक-सेवा भारत

नदी से - पानी नहीं, रेत चाहिए
पहाड़ से - औषधि नहीं, पत्थर चाहिए
पेड़ से - छाया नहीं, लकड़ी चाहिए
खेत से - अन्न नहीं, नकद फसल चाहिए

उलीच ली रेत, खोद लिए पत्थर
काट लिए पेड़, तोड़ दी मेड़

रेत से पक्की सड़क, पत्थर से मकान बनाकर
लकड़ी के नक्काशीदार दरवाजे सजाकर

अब भटक रहे हैं ....!!

मृत कुओं में झाँकते, रीती नदियाँ ताकते,
झाड़ियाँ खोजते लू के थपेड़ों में,
बिना छाया के ही हो जाती सुबह से शाम...!!!
फिर भी सब बर्तन खाली। सोने के अंडे के लालच में, मुर्गी मार डाली!!!

(जिसने भी लिखा बहुत सुंदर बात कही)

सतत प्रयासरत टीम

कोरोना की दूसरी लहर का दृश्य किसी से छिपा नहीं रहा। एक ओर संक्रमण और मौत के चौंका देने वाले आँकड़े तो दूसरी ओर अस्पतालों की चरमराती व्यवस्था। जरुरी दवाओं की किल्लत, अस्पतालों में बेड का अभाव, ऑक्सीजन सिलेन्डर के लिए मची अफरा-तफरी, ऑक्सीजन के अभाव में दम तोड़ते लोगों का ताँता।

ऐसी स्थिति में 'सेवा भारत', बिहार, पटना टीम के लिए यह सोचना जरूरी हो गया कि ऐसी स्थिति में हम अपनी सदस्य बहनों के लिए तुरन्त में क्या कर सकते हैं। कार्यालय जाना भी संभव नहीं हो पा रहा था। अत: ऐसे में ऑनलाईन बैठक कर, आपसी सहमती से तय किया गया कि संसाधन जुटाने और योजना बनाने, रणनीति तय करने में थोड़ा वक्त लग सकता है लेकिन फिलहाल ***सबसे पहले हम अपनी बहनों को सही जानकारी तो पहुँचा ही सकते हैं जिससे उन्हें अपने-आपको सुरक्षित रखने में मदद मिले।*** इसके साथ ही इस बात पर भी विचार किया गया कि आगेवान बहनों एवं सदस्य ***बहनों के लगातार सम्पर्क में रहकर भी हम भावनात्मक एवं संवेदनात्मक रुप से उनके मनोबल को बनाये रख सकते हैं।***

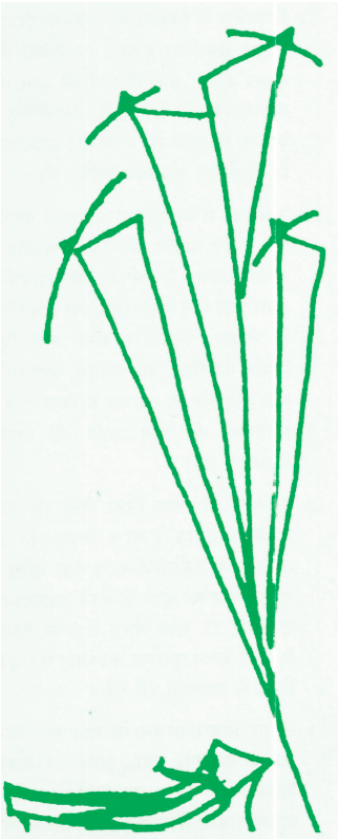

जल्द ही हमारी टीम ने कोविड-19 को लेकर एक छोटा-सा डॉक्युमेन्ट तैयार किया जिसमें हमारी कोशिश रही कि तकनीकी बातों की ना तो हम चर्चा करें और ना ही तकनीकी शब्दों का इस्तेमाल हो। हमारा पूरा फोकस बीमारी से बचाव को लेकर रहा, जिसमें हमने बीमारी के मुख्य लक्षण, बचाव हेतु अपनाये जाने वाले व्यवहार, कोविड के मरीजों की देखभाल के दौरान सुरक्षित व्यवहार, कार्यस्थल पर एवं काम से वापस आने पर बरती जाने वाली सावधानियाँ एवं बचाव के कुछ घरेलु उपाय जो कि साइन्टिफिक भी थे, के ऊपर रहा। एक बहुत ही महत्त्वपूर्ण संदेश यह भी दिया गया कि संकट की इस घड़ी में अपने-आपको ऊर्जावान एवं सकारात्मक कैसे बनाये रखना है।

इस डॉक्युमेन्ट की मदद से पहला उन्मुखीकरण पटना टीम के साथ किया गया। पुन: पटना टीम के द्वारा ये संदेश आगेवान बहनों को और उसके बाद आगेवान बहनों के द्वारा सदस्य बहनों तक टेलीफोन और मोबाइल के माध्यम से पहुँचाया जाने लगा। बहनों की प्रतिक्रिया और माँग को देखते हुए मुँगेर, भागलपुर एवं कटिहार जिले में भी इसकी शुरुआत की गयी।

हमारी ये गतिविधियाँ चल ही रही थीं कि इसी बीच 'सेवा' द्वारा राष्ट्रीय स्तर पर विशेष रणनीति के तहत कई गतिविधियों की शुरुआत की गई, जिसके अन्तर्गत जागरुकता के अलावा डॉक्टर के द्वारा टेलीफोन के माध्यम से बहनों को परामर्श की व्यवस्था, हेल्थ कीट का वितरण एवं इस्तेमाल, राशन वितरण आदि शमिल हैं।

इन गतिविधियों हेतु विशेष रणनीति तैयार की गई है जिसके तहत चरणबद्ध तरीके से कार्य किया जा रहा है। साथ-ही-साथ ***प्रतिदिन विभिन्न स्तर पर उचित मॉनिटरिंग एवं रिपोर्टिंग भी की जा रही है।***

इस प्रकार बिहार टीम सदस्य बहनों को कोविड की स्थिति में हर संभव मदद के लिए सतत प्रयासरत है।

-रंजना सिन्हा
स्टेट हेल्थ को-ऑर्डिनेटर
पटना,बिहार

तकनीकी बनी रोज़ी-रोटी का साधन

'सेवा भारत' भागलपुर की महिला किसानों की जीविका का मुख्य साधन खेती-बाड़ी है। पिछले साल कोरोना काल में महंगे बीज और बीज की उपलब्धता नहीं हो पाने के कारण खेती में नुकसान उठाना पड़ा। इस आपदा को अवसर में बदलने के लिए 'सेवा भारत' भागलपुर की टीम एवं किसानों के बीच इस समस्या के समाधान पर चिंतन करने और निदान निकालने पर जोर दिया गया।

किसानों की समस्या यह थी, कि लॉक डाउन होने के कारण बीज की दूकान बंद है। अपनी गाड़ी या यातायात का साधन नहीं है और इस स्थिति में किसानों तक बीज कैसे पहुँचे, इस समस्या के चलते किसान अपनी जीविका खोती हुई देखकर परेशान होने लगे।

'सेवा भारत' द्वारा इस समस्या का निदान ढूंढने को कर्ण भूमि कृषक प्रोड्यूसर कंपनी लिमिटेड को कहा गया। इसके लिए एक टीम बनाई गई। इस टीम में कृषि वैज्ञानिक, सुपरवाइजर, निर्देशक मंडल, बिजनेस असोसिएट एवं एसबीआई फाउंडेशन से दो फेलोशिप स्टूडेंट रुद्रेश दहीआर एवं गीतिका कुमारी शामिल हुए और किसानों के लिए एक फॉर्म(App) को बोकोल्लेक्ट प्रोग्राम के तहत विकसित किया

गया। ***इस एप के माध्यम से किसानों की डिमांड बहुत ही सुविधाजनक रूप से ऑनलाइन के माध्यम से एकत्रित हो गई।*** इस एप को चलाने एवं कृषि साथी को ट्रेनिंग एवं डिमांड को एकत्रित करने का पूरा कार्यभार रुद्रेश दहीआर एवं गीतिका कुमारी को दिया गया। बिजनेस असोसिएट अमन अग्रवाल के द्वारा बिजनेस प्लान व कृषि वैज्ञानिक के द्वारा उन्नत किस्म के बीजों का चयन किया गया। सुपरवाइजर पूनम कुमारी के द्वारा डिमांड एवं सप्लाई की जिम्मेवारी पूरी की गई।

इस पूरी टीम ने मिलकर जब अपनी ताकत लगाई

SEWA
सेवा शक्ति केन्द्र, भागलपुर
असंगठित क्षेत्र की कामगार महिलाओं की अपनी संस्था

निशुल्क COVID-19 (कोरोना) से संबंधित समस्यायों पे
डाक्टर द्वारा परामर्श एवं सहयोग हेतु

संपर्क करे :- 8252936367
समय 10 AM - 5 PM

स्वास्थ्य, सामाजिक सुरक्षा, स्व रोजगार एवं कृषि
संबंधित समस्याओं पे परामर्श और सहयोग हेतु।

तो आगेवानों की हिम्मत की नींव और इस टीम की *तकनीकी आधारित बिजली के वेग से किसानों के बीच ऐसा प्रकाश फैला कि किसानों की परेशानी इस तरह से खत्म हो गई जैसे सूरज की पहली किरण से अँधेरा खत्म हो जाता है।*

किसान अपनी कृषि सम्बन्धित जरूरतों को इस एप के माध्यम से बुक करते हैं। किसानों के द्वारा निर्धारित तिथि पर उनके घर तक बीज पहुँचा दिया जाता है। इसके साथ-साथ किसानों की फसल उत्पादन, रोग एवं उसके निदान से संबंधित समस्याओं के निवारण हेतु कृषि वैज्ञानिक का मोबाइल नंबर 7635021023 एवं कोरोना सम्बन्धी हेल्पलाइन नंबर 8252936367 की शुरुआत की गई। इस नंबर पर डॉक्टरों के द्वारा कोरोना के हलके लक्षण वाले मरीजों को सलाह देने का काम किया जा रहा है।

महामारी के इस काल में नई तकनीकी का उपयोग किसानों के लिए वरदान साबित हो रहा है।

-सुबोध कुमार मिश्रा
कृषि विशेषज्ञ-सेवा भारत,भागलपुर

हर हाल में, हर बहन के साथ है 'सेवा'

'सेवा' दिल्ली अपने सदस्यों के प्रति जिम्मेदारी निभाने के लिए हमेशा तत्पर रही है। महामारी के इस दौर में जब दिल्ली में चारों तरफ त्राहि-त्राहि मच रही है तब 'सेवा' दिल्ली की कर्मठ आगेवान बहनें और जुझारू कार्यकर्ता बढ़-चढ़कर अपनी जिम्मेदारी निभा रहे हैं। उनकी यह भागीदारी कई स्तरों पर चल रही है।

समुदाय में स्थित 'सेवा' सदस्यों के स्वास्थ्य का विषय हो, राशन का हो या उनके लिए एडवोकेसी करना हो, बच्चों के दूध की समस्या हो या गर्भवती माताओं का विषय हो 'सेवा' दिल्ली इसमें सक्रिय रूप से भागीदारी कर रही है। कोविड-19 के समय में हम महसूस कर रहे हैं कि इस बार पहले से भी ज़्यादा भयानक और त्रासदी का संकट दिल्ली में चल रहा है। शायद ही कोई ऐसा घर बचा हो जहाँ पर कोविड-19 के लक्षण किसी व्यक्ति में न हों। इस महामारी में दिल्ली के अस्पतालों के बेड का पूरा भर जाना, ऑक्सीजन सिलेंडर का ना मिलना, मृत्यु दर का बढ़ना बहुत ही भयानक स्थिति रही है। इस स्थिति का आंकलन करते हुए 'सेवा' दिल्ली ने सबसे पहले सरकार व अन्य संस्थाओं के साथ मिलकर ऑक्सीजन सिलेंडर आदि पर अपने सदस्यों के लिए सबसे पहले कार्य किया। इस काम में काफी ज्यादा समय लगा क्योंकि जहाँ भी पता चलता कि सिलेंडर मिलने की संभावना है सब उसी तरफ दौड़ लगा देते। इसके साथ-साथ *बहनों के स्वास्थ्य पर भी 'सेवा' दिल्ली ने पहल की और 50 आगेवान बहनों की ऐसी टीम बनाई जोकि समुदाय में रहकर अपने आसपास के क्षेत्रों की बहनों और बच्चों के स्वास्थ्य, कोविड-19 के लक्षण, उससे बचाव के उपाय और आइसोलेशन की विधि आदि बताकर समुदाय के लोगों को जागरूक कर रही हैं।*

इन सभी बहनों के पास एक-एक हेल्थ कीट है जिसमें थर्मामीटर, ऑक्सीनो मीटर, ग्लव्स, मास्क आदि हैं। हमारी बहनें इस हेल्थ किट को वहाँ दे देती हैं जहाँ पर कोविड-19 के लक्षण से लोगों को ग्रस्त पाती हैं। जब सदस्य ठीक हो जाते हैं तो ऑक्सीनो मीटर और थर्मामीटर सदस्य

सेनीटाइज करके वापस कर देते हैं। इसके अलावा, जिन बहनों में कोविड-19 के लक्षण हैं या ***किसी बहन को गायनिक डॉक्टर की जरूरत है तो हमारी आगेवान बहनें उनके लिए डॉक्टरी परामर्श की व्यवस्था भी कर रही हैं।*** मोबाइल या टेलीफोन के माध्यम से उनको डॉक्टर से परामर्श भी दिलवा रही हैं। वर्तमान में हमने 500 मास्क अपने सभी क्षेत्रों में वितरित किये हैं और इसके साथ 1300 राशन किट हर उस परिवार तक पहुँचाई है जिन्हें विपत्ति की इस घड़ी में सबसे ज्यादा जरूरत थी।

लॉकडाउन के दौरान हमने यह भी देखा है कि जितने भी सरकारी या प्राइवेट हॉस्पिटल थे सभी में केवल कोरोना पेशेंट को ही देखा जा रहा था। इस दौरान 'सेवा' दिल्ली के समक्ष गर्भवती महिलाओं के काफी केस आए जिनमें अल्ट्रासाउंड की डिमांड के साथ-साथ अगर डिलीवरी भी होती हो तो प्रसूता को कहाँ ले जाया जाये। हमने ऐसी बहनों को 1 से 2 हॉस्पिटल से लिंक किया है और इनमें कुछ ऐसी महिलाएँ भी शामिल हैं जो इस महामारी के दौरान अपना अल्ट्रासाउंड इलाज नहीं करा पा रही हैं, उनकी भी 'सेवा' दिल्ली ने आगे बढ़कर मदद की है। मुस्तफाबाद की ***नाजियाबहन*** को पूरा समय चल रहा था और वे डिलीवरी के लिए कहाँ जाएँ, इस समस्या से जूझ रही थीं। तब उन्होंने 'सेवा' के सामने मदद की गुहार लगाई। 'सेवा' ने तुरंत ऐसे एक-दो प्राइवेट हॉस्पिटल ढूँढे, जहाँ बहन की डिलीवरी आसानी से हो पाए। नाजियाबहन कहने को तो संयुक्त परिवार में रहती हैं लेकिन सबका अपना कमाना और अपने खर्चे खुद उठाने वाली बात है। ऐसे समय पर इनके परिवार वालों ने इनकी मदद करने से मना कर दिया। ऐसे में उनके पति जो कि एक सिलाई कामगार हैं और इन दिनों उनके पास काम भी नहीं था तो वे भी इतने सक्षम नहीं थे कि नाजियाबहन की डिलीवरी का खर्च उठा पाएँ। तब 'सेवा' ने उनकी डिलीवरी का समस्त खर्च वहन किया। उन्होंने 18 मई को एक खूबसूरत बेटी को जन्म दिया।

नाजियाबहन की तरह हमारी ऐसी बहुत सारी सदस्य हैं जो कि अपना राशन का खर्च भी नहीं उठा पा रही हैं। फिलहाल 1400 परिवारों तक हमने राशन किट पहुँचाई है ताकि अभी 15 से 20 दिन का खर्च उस राशन किट से चला सकें। इस राशन किट में जरूरत की सभी चीजें शामिल हैं जैसे कि आटा, चावल, सभी प्रकार के मसाले नमक, चीनी, दाल, तेल आदि शामिल हैं।

इस प्रकार 'सेवा' दिल्ली राशन के द्वारा भी अपनी सदस्यों की मदद कर रही है। साथ ही ऐसे लोग जो कि भुखमरी की कगार पर आ गए हैं और उनको तुरंत राशन की जरूरत है तो पेटीएम के द्वारा वे खुद से राशन खरीदते हैं और उसका बिल 'सेवा' के द्वारा चुकाया जा रहा है। इसमें ऐसे परिवार भी शामिल हैं जो कि ***अपने बच्चों को दूध भी नहीं पिला पा रहे हैं जबकि बच्चों की उम्र अभी जीरो से 2 साल है तो उन्हीं के क्षेत्र में जो डेरी है उससे उन लोगों को लिंक किया गया है ताकि वे अपने बच्चों के लिए दूध ले सकें। इससे 300 बच्चों को दूध मिल पा रहा है।*** हम सरकार पर भी दबाव बना रहे हैं कि वह जल्द-से-जल्द आम लोगों की उपरोक्त सभी समस्याओं का समाधान करें। जिनके पास राशन कार्ड नहीं हैं, उनको भी राशन मिले। आँगनवाड़ी के बच्चों को सरकार की ओर से पौष्टिक आहार मिले, गर्भवती माताओं को पौष्टिक आहार मिले। निर्माण कामगारों के खाते में सीधे पैसे आएँ। इन सभी मुद्दों पर अनेक प्रकार से सरकार के साथ एडवोकेसी कर रहे हैं ताकि हम ज्यादा से ज्यादा लोगों को राहत दिलवा पाएँ।

-लता
उपाध्यक्ष-सेवा दिल्ली यूनियन

बहनों को घरबैठे रोज़गार सुलभ करवाया

2020 में पहली बार कोविड-19 की पहली लहर आई थी जिसने कई लोगों की जान ले ली थी और गरीबों का जीवन अस्त-व्यस्त कर दिया था। कुछ इसी तरह की स्थिति अब दूसरी लहर के समय में भी है।

घरखाता कामगारों का काम तो तब से ही लगभग बंद सा हो गया है। पहली लहर के समय सरकार और गणमान्य व्यक्तियों की तरफ से राशन की सहायता मिल गई थी। अक्षय पात्र की गाड़ियों द्वारा भी जगह-जगह नि:शुल्क भोजन की व्यवस्था की जा रही थी।

हालाँकि अक्षय पात्र से मदद अभी भी मिल रही है लेकिन अब कोविड-19 की दूसरी लहर में सरकार ने अभी तक तो कोई मदद नहीं की है। जिन बहनों की मजदूर डायरी बनी है उनके खाते में एक बार मात्र 1000 रुपये दिये हैं।

'सेवा' अभी भी अपनी सदस्य बहनों को रोज़गार सुलभ कराने का हरसंभव प्रयास कर रही है। इसके अंतर्गत 100 बहनों ने 50,000 मास्क तैयार कर लिये हैं। इसके अलावा, 3.50 लाख मास्क का आर्डर आया है। बहनों को प्रति मास्क 3 रुपये का भुगतान किया जाता है। लॉकडाउन में मास्क तैयार करना ही बहनों के रोज़गार का जरिया बना हुआ है।

जयपुर में 'सेवा' जिन क्षेत्रों में काम करती है उन सभी क्षेत्रों-रामगंज, पहाड़गंज, ईदगाह, शास्त्री नगर में भट्टा बस्ती

आदि में मास्क का काम चल रहा है। भट्टा बस्ती में अधिकतर बहनें कच्ची बस्ती में रहने वाली हैं। इन दिनों जयपुर में लगातार बारिश हो रही है इसके कारण कच्चे घरों में रहने वाली बहनों के मन में मकान गिरने का डर भी बढ़ गया है। रमजान माह में अधिकतर लोगों ने गरीबों और परेशान लोगों को राशन किट के रूप में दान किया। विधवाओं को पैसे बांटे, कपड़े भी दिये। इन सभी कार्यों में 'सेवा' स्टाफ ने मदद की।

'सेवा' कार्यालय से बहनें रोज कच्चा कटा हुआ मास्क ले जाती हैं और उनको सिलकर दूसरे दिन दे जाती हैं। इसके एवज में जो पैसा मिलता है उससे बहनें अपने घर का गुजारा चला रही हैं। ***ये सभी बहनें 'सेवा' से जुड़कर आत्मनिर्भर महसूस कर रही हैं और 'सेवा' के प्रति आभार भी व्यक्त करती हैं।***

अफसानाबहन के परिवार में 6 बच्चे हैं। 4 बेटियाँ और 2 बेटे। उनके पति को लकवा हो गया है। उनके घर में अभी कमाने लायक कोई नहीं है। अफसानाबहन को आगेवान बहन द्वारा पता चला कि 'सेवा' द्वारा मास्क का काम दिया जा रहा है तो वे भी 'सेवा' के कार्यालय में आईं और काम माँगा। 'सेवा' द्वारा पहले उन्हें 5 मास्क सिलने के लिये दिये गये। उन्होंने मास्क अच्छी तरह से तैयार कर दिये तो फिर उन्हें 50 मास्क दिये गये जिन्हें

वे दूसरे दिन ही तैयार करके ले आईं। उन्होंने कहा कि बहन, मुझे घर खर्च चलाना है और पति की दवा भी लानी है तब उन्हें 136 मास्क दिये गये। यह काम भी वे अपनी बेटियों की मदद से दूसरे दिन ही कर लाईं। अब वे नियमित रूप से मास्क तैयार करने का काम कर रही हैं।

18 साल की ***उजेफा*** 8वीं कक्षा में पढ़ती है। उसके पिता मजदूरी करते थे लेकिन लॉकडाउन में बेबस होकर बैठे हैं। उसकी माँ की रीढ़ की हड्डी का ऑपरेशन हुआ है। उजेफा ने पिछले साल मास्क सिलने का काम किया था इसलिए इस बार भी वो काम के लिए 'सेवा' में आई। उसको पहले 5 मास्क सिलने के लिये दिये गये। उसने मास्क ठीक से बनाकर तो इसके बाद उसे 30 मास्क और उसके बाद 150 मास्क तैयार करने के लिये दिये गये। इस तरह उजेफा ने घरबैठे ही रोज़गार प्राप्त किया और अपने घर की जिम्मेदारियों को बखूबी निभाया।

-राबिया,
फील्ड ऑर्गनाइजर

बहनों को प्रशिक्षण दिलवाया

कोविड महामारी के चलते सभी लोगों के रोज़गार पर बहुत असर हुआ है। कई लोग तो बेरोज़गार भी हो गए हैं।

देहरादून में जितनी भी घरखाता कामगार बहनें हैं लगभग उन सभी का काम खत्म हो चुका है। हमारी बुनाई वाली बहनें जो दुकान से ऑर्डर लेकर काम करती थीं, उनके पास भी काम नहीं है। इस समस्या को देखते हुए हमने अलग-अलग विभागों से संपर्क स्थापित किया। इसी कोशिश के दौरान ***हमने उद्योग निदेशालय से बात करके 22 बहनों को ट्रेनिंग प्रोग्राम के साथ जोड़ा। यह प्रशिक्षण 2 माह तक चला।***

इस ट्रेनिंग प्रोग्राम में शामिल ***बहनों को बुनाई से सॉफ्ट टॉय, ज्वेलरी, स्वेटर, टोपी, मफलर, शोपीस आदि बनाने का प्रशिक्षण दिया गया है। इसके साथ ही बहनों को 7,800 रुपये प्रति माह की दर से मानदेय भी प्राप्त हुआ है।*** साथ-ही-साथ ट्रेनरों को 15,000 रुपये प्रतिमाह के हिसाब से वेतन मिला है। इस ट्रेनिंग प्रोग्राम से बहनों में एक नया उत्साह आया है। उद्योग निदेशालय द्वारा इन बहनों के सामान को बेचने के लिए देहरादून हाट में एक दुकान खोली गई है। इस दुकान में बैठकर बहनें खुद ही अपना सामान बेच सकती हैं, जब सारा सामान बिक जायेगा तो इन लोगों को सामान का भुगतान मिल जायेगा।

प्रशिक्षण के दौरान इन सभी बहनों को एक्सपोजर विजिट में ले जाकर मार्केटिंग की जानकारी भी दी गई। दुकान पर बैठने से बहनों की झिझक कम हुई है। ***दुकान पर बैठने का बहनों की जिन्दगी का यह पहला अनुभव था। पहली बार वो इस तरह किसी दुकान पर बैठीं और अपना सामान बेचा।*** इसके अलावा, उद्योग निदेशालय द्वारा इन बहनों को एग्ज़ीबिशन में दुकान लगाने का मौका दिया जायेगा। इन बहनों के आर्टिसन कार्ड भी बनाये गये हैं जिससे ये बहनें अपना रोज़गार शुरू कर सकती हैं। आर्टिसन कार्ड के माध्यम से इन बहनों को बहुत सारी सरकारी योजनाओं का लाभ भी प्राप्त होगा।

बहनों को इस प्रशिक्षण में सबसे अच्छी बात यह लगी एक तो उनके कौशल को निखारा गया और दूसरे, इसके एवज में उन्हें दो माह में 15,600 रुपये का भुगतान भी किया गया। इस राशि के मिलने से उनको घर चलाने में काफी मदद मिली है। एक्सपोजर विजिट से उन्होंने अन्य बहनों के प्रशिक्षण से भी बहुत सीखा जैसे प्रोडक्ट की क्वालिटी, प्रोडक्ट को किस प्रकार ज्यादा आकर्षक बनाया जा सकता है, प्रोडक्ट की कीमत निकालना आदि-आदि। पहले उनके अंदर जो झिझक थी कि ***वो बाहर कैसे जायेंगी और दुकान पर कैसे बैठेंगी, वो झिझक भी खत्म हुई है।*** इन बहनों में इतना आत्मविश्वास आ गया है कि अब ये बहनें प्रदर्शनी में जाकर अपना सामान बेचने के लिए तैयार हैं।

-रीना बेन
डिस्ट्रीक्ट को-ऑर्डिनेटर

डिजीटल से बहनों का काम आसान हुआ

मंजू देवी प्रसन्डो नया टोला गाँव की रहने वाली हैं। उनके पति का नाम सदनलाल मंडल है। उनके तीन बच्चे हैं दो बेटियाँ और एक बेटा। मंजू बहन 'सेवा' से 17 साल से जुड़ी हैं। पहले वे 'सेवा' में माइक्रोफाइनांस का काम देखती थीं फिर 'सेवा' को-ऑपरेटिव से जुड़ी और फिर नई पद्धति से खेती पर काम किया।

मंजू बहन हमेशा बहनों के हित के लिए काम करती हैं। खेतीवाली और अन्य काम से जुड़ी बहनों का हर काम में नि:स्वार्थ भावना से सहयोग करती हैं। पहले तो बहनों का सारा काम ब्लॉक एवं अन्य जगहों पर दौड़-भागकर करना पड़ता था लेकिन जब से डिजिटल सेवा अस्तित्व में आई है तब से काम करने में भी आसानी हो गई है। अब घरबैठे ही सारा काम हो जाता है और जितनी भी सरकारी योजनाएँ हैं उनके लिए घरबैठे ही ऑनलाइन आवेदन हो जाता है। इसके बाद जैसे ही मोबाइल पर मैसेज आता है वैसे ही सभी गाँव की बहनों को खबर कर घरबैठे ऑनलाइन आवेदन करवा देते हैं।

प्रधानमंत्री आयुष्मान कार्ड, मातृत्व वंदना योजना, मृत्यु प्रमाण पत्र एवं अन्य सरकारी अन्य योजनाओं का लाभ बहनों को डिजिटल के माध्यम से दिलवाया जाता है। प्रधानमंत्री सम्मान निधि योजना, किसान आंदोलन आवेदन एवं ब्लॉक की सारी सरकारी स्कीम का लाभ बहनों को डिजिटल के माध्यम से मिल रहा है। सरकारी बीज, खाद एवं बिजली बिल, गैस कनेक्शन का आवेदन भी इसी प्रकार किया जाता है।

सोनीबहन

2020 में प्रधानमंत्री आयुष्मान कार्ड के लिए 200 बहनों के आवेदन करवाये। 100 बहनों को मातृ वंदना योजना का लाभ दिलवाया गया। 100 किसान बहनों को सम्मान निधि योजना का लाभ एवं अटल पेंशन बीमा व 10 बच्चों के लिए जन्म प्रमाणपत्र बनवाकर दिये गये।

मंजूदेवी

वे कहती हैं कि, सबसे बड़ी बात तो यह है कि मेरे बेटे की बी.टेक की काउंसलिंग ऑनलाइन होने वाली थी। मैं डिजीटल के साथ जुड़ी नहीं होती तो उसकी काउंसलिंग छूट जाती और उसका नामांकन भी नहीं हो पाता।

सरिता देवी, नगिया देवी सोनी बहन एवं उषा बहन आदि सभी बहनें बहुत प्रसन्न हैं कि उन्हें सभी योजनाओं का लाभ घरबैठे आवेदन करने से ही मिल जाता है।

सोनीबहन दरियापुर की रहने वाली हैं। उनके पति का नाम अमरकांत ठाकुर है। उनके तीन बच्चे हैं, दो बेटे और एक बेटी। सोनीबहन अपने घर पर सिलाई का काम करती हैं एवं दूसरी बहन को भी सिलाई का काम सिखाती हैं। वे सिलाई के अलावा खेती का काम तो करती ही हैं साथ-ही-साथ उन्होंने घर पर कम्प्यूटर की दुकान भी खोली है। उनके पति दिल्ली में मजदूरी का काम करते हैं। ***सोनीबहन किसान बहनों का डिजीटल ऑनलाइन फार्म भरने, आधार कार्ड निकालने एवं किसान रजिस्ट्रेशन का काम भी घरबैठे ही कर देती हैं।*** बहनों का जितना भी सरकारी स्कीम का काम होता है वो सब डिजिटल के माध्यम से कर देती हैं। वे कहती हैं कि मैं 'सेवा' से पाँच साल से जुड़ी हूँ। पहले मैं कहीं नहीं जाती थी लेकिन अब बहनों के साथ फील्ड में काम कर रही हूँ। ***सोनीबहन का काम देखते हुए उन्हें 'सेवा' में मास्टर ट्रेनर के रूप में नियुक्त किया गया है।*** अब वे ज्यादा से ज्यादा बहनों का डिजीटल के माध्यम से ऑनलाइन आवेदन करवा रही हैं। इससे बहनों में भी काफी जागरूकता आई है।

-मंजू देवी,
आगेवान बहन

लॉकडाउन से हुई सब्जी-भाजी की फसल बेकार

बिहार में कोरोना का कहर दिल दहलाने वाला है। बिहार के ग्रामीण इलाकों में रहने वाले भाई-बहनों की स्थिति भयावह है। गाँव में तेजी से संक्रमण फैल रहा है क्योंकि इस बार भी प्रवासी मजदूर शहरों से गाँवों में लौट रहे हैं। पिछले साल तो ऐसे प्रवासी मजदूरों के लिए क्वारेंटाइन सेंटर की व्यवस्था की गई थी लेकिन इस बार ऐसी कोई व्यवस्था नहीं है। इस अवस्था में सब लोग डरे हुए हैं।

सबसे ज्यादा प्रभाव किसानों पर पड़ा है। मक्का की खेती हो चुकी है, लेकिन उसको काटने के लिए मजदूरों की कमी हो रही है क्योंकि सब डरे हुए हैं। धान लगाने समय निकलता जा रहा है लेकिन पैसा नहीं है कि बीज खरीद पायें।

'सेवा' की कटिहार की कार्यकर्ताओं ने जिन किसान भाई-बहनों का किसान क्रेडिट कार्ड बनवा दिया था उनके बीज के लिए वे ऑनलाइन आवेदन कर रही हैं। सब्जी उगाने वाली किसान बहनों को भी बहुत नुकसान हो रहा है क्योंकि खेत से भिंडी, परवल, करेला आदि अगर 100 किलो तैयार हो रहे हैं तो बिक्री हो रही है 50 से 60 किलो तक की ही। बाकी फसल बरबाद हो रही है।

लॉकडाउन के दौरान प्रशासन के द्वारा बिक्री के लिए तय किया हुआ समय सुबह सात बजे तक का है। उस समय में जितनी बिक्री हो जाती है उतना ही पैसा बहनों के हाथ में आता है। अगर समय के बाद कोई बिक्री करता हुआ पकड़ा जायेगा तो उस पर कानूनी कार्यवाही की जाएगी इसलिए इन बहनों की बिकने से बच गई उपज बरबाद हो जाती है।

'सेवा' के द्वारा हमने 30 बहनों को मशरूम उगाने का प्रशिक्षण दिलवाया था। प्रशिक्षण के बाद कुछ बहनें मशरूम उगाने लगी थीं और उनको बेचकर अच्छी कमाई भी कर रही थीं। उन बहनों की कमाई भी बंद हो गई है क्योंकि लॉकडाउन के कारण सब रेस्टोरेंट बंद हैं। सब्जी-मंडी में उनकी उपज का सही दाम नहीं मिल रहा है।

हमारी सदस्य बहन ***मीरादेवी*** मजदूरी करके कुछ पैसा इकट्ठा करके बटिया पर थोड़ी-सी जमीन लेकर सब्जी की खेती कर रही थी। इस काम में उनके पति, बेटा, बेटी सभी ने मेहनत की। फसल में दवा, पानी, खाद सबका बराबर ध्यान रखा। कई बार तो इसके लिए उधार भी लेना पड़ा। उनके खेत में सब्जी तो अच्छी हुई थी लेकिन बिक्री ही नहीं है। उनकी सारी मेहनत पानी में चली गई। इतनी कमाई भी नहीं हुई कि उधारी को चुका सकें। मीराबहन की कहानी सुनकर ***'सेवा' की कार्यकर्ता ने उन्हें व उनके बेटे व पति को मैगी पैकिंग का काम दिलवा दिया जिसमें उन्हें अब 200 रुपये प्रतिदिन मिलने लगे हैं।*** इसके अलावा, वे अपनी बेटी के साथ रोज़ सुबह पाँच बजे से सब्जी बेचने निकल जाती हैं। दोनों भूखी प्यासी काफी देर तक बैठी रहती हैं, इस आशा में कि अच्छी बिक्री हो जायेगी लेकिन समय सीमा पूरी हो जाने पर वापस आना पड़ता है। इसके बाद वे मैगी पैकिंग के काम में जुट जाती हैं ताकि लिया हुआ कर्ज चुकाया जा सके।

मीराबहन

मीरा बहन की तरह 100 से ज्यादा बहनें है जिनको लॉकडाउन के कारण इस तरह की परेशानी का सामना करना पड़ रहा है। 'सेवा' की ओर से मीरा बहन को समझाया गया कि आप स्वस्थ रहें, समय सब ठीक कर देगा। दूसरी संस्था

से इन बहनों को मेडिसिन कीट एवं मास्क भी दिलवाये गये हैं।

बिसेरिया गाँव की सदस्य ***तेतरी देवी*** अपने माता-पिता की इकलौती संतान थीं। तेतरी बहन की शादी के बाद उनके पिताजी का देहांत हो गया। विवाह के बाद तेतरी बहन अपनी ससुराल पहुँचीं। जीवन खुशी-खुशी बीत रहा था। उनका एक बेटा हो गया था। उनके पति मजदूरी करते थे। बाढ़ का समय था, उनके पति दूसरे गाँव से मजदूरी करके घर लौट रहे थे नाव पर चार-पाँच लोग सवार थे और दुर्भाग्य से नाव डूब गई। नाव पर सवार सभी लोग डूब गए। तेतरीबहन पर दु:खों का पहाड़ टूट पड़ा। छोटा बच्चा और वृद्ध मां के साथ वे जैसे-तैसे जीवन गुजारने लगीं। उनकी मां का छोटा-सा खेत था। उसमें तेतरीबहन साग-सब्जी की खेती करने लगीं।

वे लगभग 10-11 सालों से 'सेवा' से जुड़ी हैं। 'सेवा' से तेतरी बहन को भरपूर मदद मिलती रही है। 'सेवा' की एम.एफ. में तेतरीबहन ने बचत खाता खोला है। वे अपनी जरूरत के हिसाब से लोन लेकर खेती करती हैं एवं घर में ही एक छोटी दुकान भी खोल रखी है। उनके घर में बिजली नहीं थी इसलिए 'सेवा' के सोलर कार्यक्रम के अंतर्गत उन्होंने किश्तों पर सोलर लाईट भी लगवा ली है।

इस बार उन्हें बहुत क्षति हुई है। सब्जी-भाजी की बिक्री नहीं हो रही है। दुकान भी काफी दिन से बंद है। वे निराश हो गई हैं। 'सेवा' की बहनें उन्हें ढांढस बंधा रही हैं कि आप हौसला रखें, समय के साथ सब ठीक हो जाएगा।

-अंजनाबहन,
ऑर्गनाइजर

बहनों की मदद के लिए हरदम तत्पर

मुबारकपुर की आगेवान बहन बताती हैं कि कोरोना की दूसरी लहर ने एक बार फिर से कोहराम मचा रखा है। सरकार ने फिर से लॉकडाउन की घोषणा की है जिसकी वजह से दुकानें एवं हाट-बाजार सुबह 7 बजे से 11 बजे तक ही चलते हैं। इस समय फेरी-टोकरे वाली बहनों की स्थिति बहुत खराब हो गई है। बहनें बताती हैं कि इस समय घर चलाना बहुत ही मुश्किल हो गया है क्योंकि 11 बजे तक सारा सामान सस्ते दामों पर बेचकर घर वापस लौटना पड़ता है। बाहर जाने में डर लगता है, घर चलाएँ या दवा कराएँ, कुछ समझ में नहीं आ रहा है। इन बहनों को 'सेवा' की बहनें घरेलू उपचारों के बारे में बताती हैं जिससे वे अपने स्वास्थ्य का जतन कर सकें।

विजापत की ***मीराबहन*** का कहना है कि अभी हमारी समझ में यह नहीं आ रहा है कि ये लॉकडाउन कब तक हमें भुखों मरने के लिए मजबूर करेगा। ***इस कोरोना ने तो हमारी हालत बहुत ही दयनीय कर दी है। जो भी रोजी-रोटी का काम है, वो छूट गया है।*** अपनी बातों को किससे और कैसे कहें क्योंकि सबकी हालत एक जैसी ही है। हालाँकि, सरकार की ओर से जो राशन का वितरण किया गया है उससे हमें बहुत राहत मिली है। कुछ दिन के लिए खाने की समस्या तो टली।

पिंकीबहन मुबारकपुर के विजापत में रहती हैं। इस समय विजापत की स्थिति भी सभी क्षेत्रों की तरह बद से बदतर है। चारों तरफ कोरोना के मरीज हैं। मुबारकपुर से

सटे दानापुर में सदर अस्पताल होने के कारण उसमें सभी कोरोना पीड़ितों का इलाज चल रहा है। इस वजह से इसके आसपास के क्षेत्र भी प्रभावित हो रहे हैं।

हमारी आगेवान बहनें अपने आसपास की बहनों की मदद के लिए हमेशा तत्पर रहती हैं। वे उन्हें जागरूक कर रही हैं, फोन से या उचित दूरी रखकर वे उन्हें समझाती हैं कि इस बीमारी से कैसे बचा जा सकता है। बार-बार साबुन से हाथ धोने एवं डबल लेयर की माक्स लगाने की सलाह दे रही हैं। साथ-ही-साथ उन्हें समझाती हैं कि बिना किसी वजह से घर से बाहर न निकलें।

इसके साथ-साथ कार्यकर्ता एवं आगेवान बहनें 'सेवा' की टीम की मदद से जरूरतमंद भाई-बहनों को राशन-खाना इत्यादि जरूरत की वस्तुएँ पार्षद के माध्यम से दिलवा रहे हैं। इससे इन लोगों को थोड़ी-सी राहत पहुँची है।

नेहरू नगर हरिजन कॉलोनी की 20 सदस्य बहनों को कोरोना से बचाव की जानकारी दी गई और उन्हें बेवजह घर से बाहर निकलने के लिए मना किया गया है। इसके अलावा इन बहनों को घरेलु उपचार के बारे में भी जानकारी दी जा रही है।

-पूनम पांडेय,
प्रोजेक्ट को-ऑर्डिनेटर

सेवा भारत, मुँगेर द्वारा चलाये जा रहे कोविड-19 जागरूकता कार्यक्रम

'सेवा भारत' द्वारा सेवा मुँगेर की सदस्य बहनों के बीच कोविड-19 से बचाव हेतु जागरूकता कार्यक्रम चलाया जा रहा है। अस्पतालों में मरीजों की काफी भीड़-सी है। इसे देखते हुए 'सेवा' शक्ति केंद्र के हेल्प लाईन नम्बर 7739560525 को कोविड हेल्पलाइन नम्बर की तरह उपयोग किया जा रहा है। इस नम्बर पर सदस्य बहनें कोविड से सम्बन्धित जानकारी लेती हैं। यदि ***किसी बहन को डॉक्टर के परामर्श की जरूरत होती है तो कॉन्फ्रेंस कॉल के द्वारा बात भी करवाई जा रही है।*** इसके अलावा 'सेवा' के कार्यकर्ता अपनी आगेवान या सदस्य बहनों से प्रतिदिन उनका हाल चाल लेते है तथा कोरोना से सम्बन्धित जानकारी उपलब्ध करा रहें हैं। जिन आगेवान बहनों के पास वाट्सअप नंबर है, उनका 'सेवा' आगेवान के नाम से समूह बनाया गया है। इस समूह पर वेरीफाय किया गया डाटा साझा किया जा रहा है।

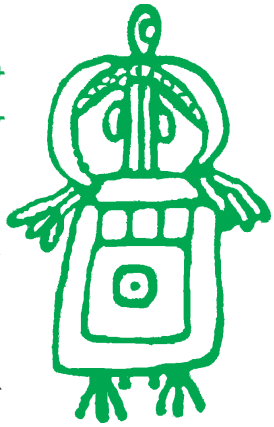

अपने-अपने क्षेत्र के सुपरवाइजर द्वारा 4 से 5 बहनों को एक साथ जोड़कर फोन पर उन सभी को टीका लगवाने के लिए प्रोत्साहित किया जा रहा है।

इसके अलावा, इम्युनिटी बढ़ाने के लिए घरेलु उपचार भी बताए जा रहे हैं। हमारी जो बहनें टीका लगवाने से डर रही हैं। उन सभी बहनों को समझा रहे हैं कि टीका लगाने से वे सुरक्षित हो जाएँगी। जिन बहनों ने टीका लगवा लिया है उन बहनों के अनुभवों के बारे में बताकर अन्य बहनों को टीका लगवाने के लिए प्रेरित किया जा रहा है।

-जयप्रकाश,
प्रोजेक्ट को-ऑर्डिनेटर

अपने अधिकार के लिए बोलना सीखा

सेवा भारत, रोटरी क्लब चंडीगढ़ और भवन विद्यालय चंडीगढ़ ने पिछले 3 सालों से सकेतड़ी की झुग्गियों को गोद लिया हुआ है। सकेतड़ी गाँव जिला पंचकूला हरियाणा में पड़ता है। इस गाँव में लगभग 150 झुग्गियाँ हैं, जिसकी आबादी 700 है। ये लोग पिछले 25 सालों से यहाँ पर रह रहे हैं।

यह तीनों संस्थाएँ अप्रैल 2018 से इन लोगों के विकास के लिए संयुक्त रूप से कार्यरत हैं, जिसमें यहाँ रहने वाले लोगों के स्वास्थ्य, शिक्षा, इन लोगों को सरकारी स्कीमों के साथ जोड़ना, महिलाओं का सशक्तिकरण करना और सामान्य जागरूकता फैलाने का काम देख रहे हैं।

जिस जमीन पर यह झुग्गियाँ हैं वह जमीन हरियाणा शहरी विकास प्राधिकरण की है। हरियाणा शहरी विकास प्राधिकरण के अधिकारी साल में दो-तीन बार झुग्गियों को तोड़ने आते हैं। वे यह झुग्गियाँ तोड़ने का पहले से इनको कोई नोटिस नहीं देते और ना ही किसी उच्च अधिकारी का नोटिस लेकर आते हैं।

जब भी ये झुग्गियाँ तोड़ी जाती हैं तब यहाँ रहने वाले लोगों का काफी नुकसान हो जाता है क्योंकि ये लोग रोज का कमाने-खाने वाले हैं और जो थोड़ा बहुत अपने घर के लिए सामान बनाते हैं, वो सब हुड्डा के लोग तोड़ कर चले जाते हैं।

वे जब पुलिस बल के साथ वापस आए, तब तक झुग्गी निवासी इस समस्या से कैसे निपटना है, यह समझ चुके थे। वे अब इकट्ठे होकर झुग्गी तोड़ने वाली मशीन के आगे बैठ गए। उन्होंने शांतिपूर्वक हुड्डा के अधिकारियों से कह दिया कि अब आपको हमारी झुग्गियाँ तोड़ने के लिए मशीन हमारे ऊपर से गुजारनी पड़ेगी।

पिछले 3 सालों से यह तीन संस्थाएँ मिलकर इन लोगों को इनके अधिकारों के लिए जागरूक कर रही हैं और अपने अधिकारों के लिए कैसे लड़ना है, वह समझा रहे हैं। इसके अलावा जबसे हमने यहाँ पर काम शुरू किया है तब से हरियाणा शहरी विकास प्राधिकरण के साथ इन झुग्गियों के स्थान परिवर्तन की बात कर रहे हैं कि अगर हरियाणा शहरी विकास प्राधिकरण इन लोगों को यहाँ से हटाना चाहती है तो इनको किसी और स्थान पर बसा दिया जाये न कि इनको उजाड़ा जाए।

इस चर्चा के कारण जब से हम यहाँ काम कर रहे हैं

तब से उतनी बड़ी संख्या में झुग्गियों को नहीं तोड़ा गया था।

इस बार 18 मार्च 2021 को एक बार फिर हुड्डा के अधिकारी झुग्गियाँ तोड़ने आए। जब इस घटना का 'सेवा' के कार्यकर्ताओं को पता चला तो वे तुरंत वहाँ पहुँच गए। वहाँ पहुँचकर उन्होंने अधिकारियों से पूर्व सूचना पत्र या किसी उच्च अधिकारी के झुग्गियों को तोड़ने संबंधित ऑर्डर की माँग की लेकिन हुड्डा के अधिकारियों का कहना था कि वे हुड्डा की जमीन से झुग्गियों को हटा रहे हैं और इसके लिए उनको किसी के नोटिस की जरूरत नहीं और ना ही किसी को नोटिस देने की जरूरत है। हमें आज इन झुग्गियों को तोड़ने का ऑर्डर मिला है तभी हम झुग्गियाँ तोड़ रहे हैं। जब 'सेवा' के लोगों ने उनसे कहा कि हम आपको इस तरह ये झुग्गियाँ तोड़ने नहीं देंगे तो अधिकारी पुलिस बल लेने के लिए वापिस गए।

थोड़ी देर बाद वे जब पुलिस बल के साथ वापस आए, तब तक झुग्गी निवासी इस समस्या से कैसे निपटना है, यह समझ चुके थे। ***वे अब इकट्ठे होकर झुग्गी तोड़ने वाली मशीन के आगे बैठ गए। उन्होंने शांतिपूर्वक हुड्डा के अधिकारियों से कह दिया कि अब आपको हमारी झुग्गियाँ तोड़ने के लिए मशीन हमारे ऊपर से गुजारनी पड़ेगी।***

यह पहली बार हो रहा था कि झुग्गी निवासी हुड्डा अधिकारियों से पूर्व सूचना पत्र और झुग्गी तोड़ने के लिए किसी उच्च अधिकारी के पत्र की माँग खुद कर रहे थे। जबकि इससे पहले जितनी बार झुग्गियाँ तोड़ी गईं तब वे लोग इतने डरे होते हैं कि अपना सामान इकट्ठा करने में लगे रहते हैं और अधिकारियों से झुग्गी तोड़ने का कारण तक नहीं पूछते। लेकिन ***इस बार उन सबने इकट्ठे होकर अपनी झुग्गियाँ टूटने से बचा लीं।*** यह एक छोटा-सा बदलाव है जिसमें 'सेवा' पंजाब लोगों को डर से उनके अधिकार तक लाने में कामयाब हो पाई।

अंत में 'सेवा' के स्टेट को-ऑर्डिनेटर और रोटरी क्लब के प्रेसिडेंट ने हरियाणा शहरी विकास प्राधिकरण के अधिकारियों से बातचीत की और उनसे कहा कि अभी आपको यह विध्वंस बंद करना होगा और हम आपके उच्च अधिकारियों से मिलेंगे। उनकी बात सुनकर हुड्डा के अधिकारी ड्यूटी का समय खत्म होने की बात बोलकर वापस चले गए।

- सिमरनजीत सिंह
प्रोजेक्ट को-ऑर्डिनेटर, सकेतड़ी,

'सेवा' एक संगठन तो है ही और साथ ही आंदोलन भी है। किसी भी आंदोलन के पीछे विचार की शक्ति होती है। 'सेवा' को इलाबहन जैसी हमारे समय की प्रमुख स्त्री-चिंतक की विचार शक्ति प्राप्त है। किसी भी संगठन या आंदोलन में उसके मुखपत्र की बड़ी भूमिका होती है और यही भूमिका 'अनसूया' लगातार निभाता आ रहा है।

मालिक : ''अनसूया ट्रस्ट'' की ओर से प्रकाशक-मुद्रक : प्रीति शान्त, म.प्र.हिन्दी साहित्य सम्मेलन, पी.एण्ड टी. चौराहा, शास्त्रीनगर, भोपाल (म.प्र.)-462003. फोन : 0755-2790039
मुद्रण : प्रियंका ऑफसेट, प्रेस कॉम्प्लेक्स, एम.पी. नगर, भोपाल. फोन : 2555789

अनसूया

अनसूया कार्यालय :

द्वारा- म.प्र.हिन्दी साहित्य सम्मेलन,
मायाराम सुरजन स्मृति भवन, पी.एण्ड टी.चौराहा,
शास्त्रीनगर, भोपाल (म.प्र.) 462003 फोन नं. : 2790039

ई-मेल - ansuya_trust@rediffmail.com,
Facebook - ansuya_trust@rediffmail.com